प्रारंभिक अंग्रेज़ी

पठन कौशल–विकास एवं मॉनीटरिंग

भारत में विद्यालय
समर्थित शिक्षक–शिक्षा
www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्‌देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12/1/16
पुस्तक भवन, वी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेबसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रक्रिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

*TESS-India (*विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा*)* का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त,सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भों के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन दिया गया है*:* *.* इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट http://www.tess-india.edu.in/ पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण 2.0 EE13v2
Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है*:* http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई उन संसाधनों और अभ्यासों के बारे में है जिनसे आपके विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी भाषा में ऊँची आवाज़ में पढ़ने और मौन रहकर पढ़ने के मुख्य कौशल विकसित करने में तथा बोलकर पढ़ने से मौन रहकर पढ़ने की ओर परिवर्तन में मदद मिलती है।

जब आप अपने विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी भाषा में बोलकर पढ़ते हुए सुनते हैं तो आप उनकी पठन क्षमता का निरीक्षण कर सकते हैं। बोलकर पढ़ने से विद्यार्थियों को अपने उच्चारण का अभ्यास करने और अंग्रेज़ी भाषा के उपयोग में आत्मविश्वास विकसित करने में मदद मिलती है।

मौन रहकर पढ़ना विद्यार्थियों के लिहाज से काफी उन्नत कौशल है भले ही वे अपनी पहली भाषा में पढ़ रहे हों या दूसरी भाषा में। आमतौर पर इसका विकास तब होता है, जब उन्हें कुछ पढ़कर सुनाया जाता है और आगे चलकर वे किसी और के साथ बोलकर पढ़ते हैं। इसलिए मौन रहकर पढ़ना एक ऐसा लक्ष्य है जिसे पूरा करने के लिए काम करना चाहिए क्योंकि इससे विद्यार्थी अधिक परिपक्व और स्वतंत्र पाठक बनते हैं।

यह इकाई आपको बताएगी कि समूहों में निर्देशित पठन के लिए विद्यार्थियों को किस प्रकार संगठित किया जाए। यह आपके लिए एक नया विचार हो सकता है या आप निर्देशित पठन के पहलुओं का पहले से उपयोग कर रहे हो सकते हैं। आप पठन को प्रोत्साहित करने और इसकी मानीटरिंग करने के एक संसाधन के रूप में रीडिंग कार्डो को देखेंगे।

इस इकाई से आप क्या सीख सकते हैं

- अपने विद्यार्थियों के साथ अंग्रेज़ी भाषा ज़ोर से पढ़ने को विकसित करना।
- अपने विद्यार्थियों के खामोशी से अंग्रेज़ी भाषा पठन को विकसित करना।
- अंग्रेज़ी भाषा में निर्देशित पठन को व्यवस्थित करना।

1 अपने विद्यार्थियों के साथ अंग्रेज़ी भाषा को ज़ोर से पढ़ने को विकसित करना

इस बारे में बातचीत के साथ शुरुआत करें कि आप अंग्रेज़ी भाषा के पाठकों के रूप में अपने विद्यार्थियों को विकसित करने के लिए अब क्या करते हैं।

गतिविधि 1: अपनी पठन दिनचर्या का परीक्षण करें

अपनी कक्षा को अंग्रेज़ी भाषा में ऊंची आवाज़ में पढ़कर सुनाना केवल आपके लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है – आपके विद्यार्थियों को भी ऐसा करने के अवसर मिलने चाहिए।

अपनी खुद की कक्षाओं के बारे में सोचें। आप निम्नलिखित गतिविधियाँ कितनी बार करते हैं – कभी नहीं, कभी-कभार या अक्सर?

सारणी 1 आप निम्न गतिविधियाँ कितनी बार करते हैं?

गतिविधि	कभी नहीं	कभी-कभार	अक्सर
मैं पाठ्यपुस्तक में या बोर्ड पर लिखा हुआ ऊंची आवाज़ में पढ़ता/पढ़ती हूँ। विद्यार्थी मौन रहकर मेरे साथ पढ़ते हैं।			
मैं पाठ्यपुस्तक में या बोर्ड पर लिखा हुआ ऊंची आवाज़ में पढ़ता/पढ़ती हूँ। विद्यार्थी मेरे बाद तुरंत दोहराते हैं।			
मैं पाठ्यपुस्तक में या बोर्ड पर लिखा हुआ ऊंची आवाज़ में पढ़ता/पढ़ती हूँ। विद्यार्थी मेरे साथ ऊंची आवाज़ में बोलकर पढ़ते हैं।			
विद्यार्थी अपनी क्षमता के अनुसार छोटे समूहों में ऊंची आवाज़ में पढ़ते हैं, जिन्हें मैं सुनता/सुनती हूँ, जबकि शेष कक्षा चुपचाप काम करती है।			

मैं विद्यार्थियों को ऊंची आवाज़ में पढ़ने के लिए बुलाता/बुलाती हूँ और पूरी कक्षा सुनती है।			
मैं विद्यार्थियों से कोई पाठ चुपचाप पढ़ने को कहता/कहती हूँ और मैं उनका अवलोकन करता/करती हूँ।			
मैं विद्यार्थियों से कोई पाठ चुपचाप पढ़ने को कहता/कहती हूँ और मैं उन्हें इस बारे में सवाल पूछती हूँ।			

ये सभी प्रभावी विधियाँ हैं और अपनी कक्षा की पठन दिनचर्या में बारी-बारी से इनका उपयोग करना एक अच्छा अभ्यास है। लेकिन विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी भाषा बोलने का मौका जितना ज्यादा मिलेगा, उतना ही बेहतर होगा। इसलिए ऊंची आवाज़ में पढ़ना और विद्यार्थियों से भी ऊंची आवाज़ में पढ़ने को कहना एक बहुत अच्छा अभ्यास है – वे आपके साथ या आपके तुरंत बाद बोलकर पढ़ सकते हैं या आप केवल उन्हें सुन भी सकते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थिति में, आप विद्यार्थियों के पठन कौशल को देख सकते हैं और उसका मूल्यांकन कर सकते हैं।

आप किन दिनचर्याओं का उपयोग सबसे ज्यादा करते हैं? एक शिक्षक के रूप में आपके लिए और अंग्रेज़ी भाषा सीखने वालों के रूप में आपके विद्यार्थियों के लिए इन दिनचर्याओं के क्या लाभ हैं?

अब उन दिनचर्याओं को देखें जिनका आप उपयोग नहीं करते हैं या बहुत कम करते हैं। एक शिक्षक के रूप में इन अभ्यासों को कार्यान्वित करने में आपके लिए क्या चुनौतियां हैं? यह आत्मविश्वास की बात है, संसाधनों की बात है या कक्षा के आकार की बात है? इस इकाई की गतिविधियों और संसाधनों का मकसद कक्षा में आपकी पठन दिनचर्याओं का विस्तार करने के लिए आपका आत्मविश्वास विकसित करना है।

2 विद्यार्थियों से ऊंची आवाज़ में पढ़वाना

आगे दी गई केस स्टडी में, एक शिक्षक विद्यार्थियों के पठन का निरीक्षण और मूल्यांकन करने के लिए कदम उठाते हैं।

केस-स्टडी 1: श्री गोविन्द प्रसाद विद्यार्थियों को ऊंची आवाज़ में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं

श्री गोविंद प्रसाद कक्षा पाँच में अंग्रेज़ी भाषा के शिक्षक हैं।

हमारी अंग्रेज़ी भाषा की पाठ्यपुस्तक में बहुत सारी छोटी कहानियाँ हैं। मैं हमेशा अपने विद्यार्थियों को ऊंची आवाज़ में ये कहानियाँ पढ़कर सुनाता था और मेरे विद्यार्थी मेरे साथ चुपचाप पढ़ते थे। हालांकि जब मैं उनसे प्रश्न पूछता था तो कभी-कभी मैंने देखा कि वे कहानी को समझ नहीं पाते थे या उन्हें यह नहीं मालूम होता था कि वह पाठ किस बारे है।

मैं देखना चाहता था कि वे जो पढ़ रहे थे क्या उसे वे समझते हैं या नहीं। मुझे लगा कि ऐसा करने का एक तरीका यह है कि विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक से ऊंची आवाज़ में पढ़ने को कहा जाएगा। खासतौर से जब हमने पूरी कहानी एक बार साथ में पढ़ ली हो उसके बाद। मैं हर दिन में सिर्फ तीन या चार विद्यार्थियों को ही बुला पाता था। लेकिन मुझे लगा कि यदि मैं हर दिन ऐसा करूँ तो हर दो सप्ताह में एक बार ज्यादातर विद्यार्थियों की बारी आ जाएगी। इस तरह, उन्हें ऊंची आवाज़ में पढ़ने और दूसरों को ऊंची आवाज़ में पढ़ते हुए सुनने के मौके नियमित रूप से मिलेंगे।

मुझे लगता था कि यदि मैंने अपने विद्यार्थियों को अच्छी तरह पढ़ाया है तो वे ऊंची आवाज़ में पढ़ते समय गल्तियां नहीं करेंगे। लेकिन मैंने देखा कि जो विद्यार्थी गल्तियां के बिना पढ़ रहे थे, असल में वे सिर्फ पढ़ने का दिखावा कर रहे थे और रटी हुई कहानी को दोहरा रहे थे। तब मुझे अहसास हुआ कि मैंने उन्हें जो भी पढ़कर सुनाया था। यदि उन्होंने उसे सिर्फ रट लिया है, तो वास्तव में वे कुछ भी नहीं सीख रहे थे। जो विद्यार्थी सचमुच पढ़ रहे थे और समझ रहे थे उनके पढ़ने की गति धीमी थी। वे गलतियाँ करते थे और कुछ शब्दों को पढ़ने में उन्हें कठिनाई होती थी। मुझे अहसास हुआ कि वास्तव में उन 'गलतियों' से यह पता लग रहा था कि वे लोग सीख रहे थे।

लेकिन विद्यार्थियों को गल्तियां करना अच्छा नहीं लगता इसलिए जब वे पढ़ते थे तो मुझे लगातार उन्हें प्रोत्साहित करना और उनकी प्रशंसा करना जारी रखना पड़ता था।

कभी-कभी जब विद्यार्थियों को कोई ऐसा शब्द मिलता है जिसे पढ़ना उनके लिए कठिन है तो वे इसे छोड़ने की कोशिश कर सकते हैं। लेकिन मैं उन्हें प्रोत्साहित करने की कोशिश करता हूँ कि वे थोड़ा समय देकर उस शब्द को देखें और उसके अर्थ को समझें। जब वे उस शब्द को पढ़कर उसका अर्थ समझ लेते हैं तो मैं विद्यार्थियों से कहता हूँ कि वे उस वाक्य को शुरुआत से दोबारा पढ़ें। कठिन शब्दों और वाक्यांशों को बार-बार पढ़ने का परिणाम यह दिखाई दिया कि विद्यार्थी जब ऊंची आवाज़ में पढ़ते थे उनकी गति, सटीकता और अभिव्यक्ति की क्षमता में सुधार हो रहा था। इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थियों को रोचक पाठ पढ़ने को मिल सके ताकि उन्हें बार-बार उसे पढ़ने की प्रेरणा मिले।

हालांकि मैंने देखा है कि यदि कोई विद्यार्थी कुछ पढ़ते समय बार-बार लड़खड़ाता है, तो उन्हें वह जारी रखने को कहना बेकार है। इसलिए मैं खुद के लिए यह नोट कर लेता हूँ कि इस विद्यार्थी को पढ़ने में आगे और सहायता की ज़रुरत है और अगली बार मैं उन्हें पढ़ने के लिए ज्यादा

सरल पाठ देता हूँ। इसके बाद जब भी संभव हो मैं उनके साथ अकेले बैठकर भी पढ़ाने का प्रयास करता हूँ। मैंने देखा है कि यदि विद्यार्थियों को ऐसे पाठ पढ़ने को दिए जाएँ, जिनके ज्यादातर शब्दों और वाक्यांशों से वे परिचित हैं तो उनकी पढ़ने की क्षमताओं में सुधार होने की संभावना सबसे ज्यादा होती है।

विचार कीजिए

- अंग्रेज़ी भाषा में विद्यार्थियों की पढ़ने की समझ का मूल्यांकन करने की श्री गोविंद प्रसाद की विधियाँ कौन-सी हैं?
- वे कम सक्षम पाठकों की सहायता किस प्रकार करते हैं?
- क्या आप श्री गोविंद प्रसाद की इस बात से सहमत हैं कि जब ऊंची आवाज़ में पढ़ते समय कोई विद्यार्थी गल्तियां करता है, तो इसका अर्थ है कि सीखना जारी है? क्यों या क्यों नहीं?
- श्री गोविंद प्रसाद ने इस बात का ज़िक्र किया है कि विद्यार्थियों की प्रशंसा करना और उन्हें प्रोत्साहित करना कितना महत्वपूर्ण है। आप अपनी कक्षाओं में यह कैसे करते हैं?

अगली गतिविधि में, ऊंची आवाज़ में अंग्रेज़ी भाषा पढ़ने के लिए आपके विद्यार्थियों के कौशल को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

गतिविधि 2: विद्यार्थी जब ऊंची आवाज़ में पढ़ते हैं, तब उन्हें सुनें

30-मिनट के एक सत्र की योजना बनाएँ जिसमें आपके विद्यार्थी बारी-बारी से आपको ऊंची आवाज़ में अंग्रेज़ी में पढ़कर सुनाएँ।

- एक समान क्षमताओं वाले विद्यार्थियों (छः से ज्यादा नहीं) का एक छोटा समूह चुनें।
- पाठ्यपुस्तक का एक अंश चुनकर उन्हें पढ़ने के लिए दें – वे उससे अच्छी तरह परिचित होने चाहिए।
- यह सुनिश्चित करें कि हर विद्यार्थी के पास एक-एक पाठ्यपुस्तक है या वे सभी उस पाठ को देख सकते हैं।
- शेष कक्षा को कोई ऐसा काम दें जिसे मौन रहकर किया जा सके।
- कक्षा में कोई ऐसी जगह चुनें जहाँ आप विद्यार्थियों के इस छोटे समूह के साथ बैठ सकें।
- यह नियम बनाएँ कि आपको और आपके समूह को कोई डिस्टर्ब न करे।
- कक्षा को यह बताएँ कि हर विद्यार्थी को एक छोटे समूह में आपके साथ बैठकर ऊंची आवाज़ में पढ़कर सुनाने का मौका मिलेगा।

ऊंची आवाज़ में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को सुनना।

एक छोटे समूह के साथ बैठें। उन्हें समझाएँ कि हर विद्यार्थी आपको ऊंची आवाज़ में एक पैराग्राफ पढ़कर सुनाएगा ताकि आप उनके पठन को सुन सकें और प्रोत्साहित कर सकें। छः विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक दें और उन्हें बारी-बारी से एक भाग आपको पढ़कर सुनाने को कहें।

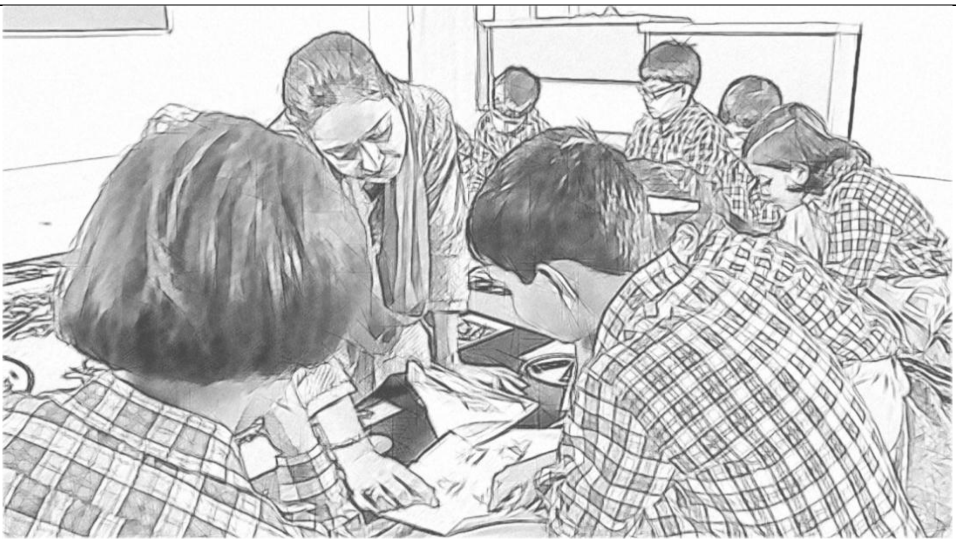

एक छोटे समूह के साथ समय बिताना।

जब आपके विद्यार्थी पढ़ते हैं तब ध्यान पूर्वक उन्हें सुनें। यदि वे किसी शब्द के बारे में अनिश्चित हैं तो तुरंत ही उनकी मदद न करें।बल्कि उन्हें प्यार से इस बात के लिए प्रोत्साहित करें कि वे उस शब्द या वाक्य को समझने की कोशिश करें। आप उन्हें निम्नलिखित में से कौन-सी रणनीतियों का उपयोग करते हुए देखते हैं?

- शब्दों को आवाज़ से समझना (वर्ण/ध्वनि के ज्ञान का उपयोग करना)
- कहानी या किसी भी संबंधित चित्र का सन्दर्भ लेकर शब्दों का अनुमान लगाना
- किसी परिचित वाक्यांश के कारण अनुमान लगाना कि अगला शब्द कौन-सा होगा
- एक बार में एक शब्द पढ़ना
- इससे जुड़े हुए पाठ और वाक्यांश पढ़ना
- प्रत्येक शब्द की ओर संकेत करना
- अपनी याददाश्त से शब्द पढ़ना
- अपनी याददाश्त से वाक्य पढ़ना
- अनुमान लगाना।

ये सभी किसी भी नई भाषा में पढ़ने का अभ्यास करने के लिए स्वीकार तरीके हैं। यदि विद्यार्थी एक रणनीति का उपयोग कर रहे हैं तो आप उन्हें शब्दों का अर्थ समझने के दूसरे तरीकों का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए आप पूछ सकते हैं कि 'इस चित्र में क्या दिखाया गया है?' या 'यह कौन-सा अक्षर है और इसकी ध्वनि कैसी है?'

विद्यार्थियों को ऊंची आवाज़ में पढ़ते हुए सुनना उनके आकलन का एक अवसर है। आप यह कैसे तय करते हैं कि विद्यार्थियों को आगे कौन-सी पुस्तक या पाठ पढ़ना चाहिए? आपके निर्णय में पठन स्तर कितने महत्वपूर्ण हैं? क्या आप विद्यार्थियों की उम्र के बारे में भी सोचते हैं? और कौन-से कारक आपके आकलन को प्रभावित करते हैं?

जब आप विद्यार्थियों को ऊंची आवाज़ में बोलते हुए सुनते हैं, तो आप उनकी वाक्पटुता और उच्चारण का निरीक्षण कर सकते हैं। आप उनसे अवधारणा के प्रश्न पूछ सकते हैं। आप विद्यार्थियों से यह भी पूछ सकते हैं कि उन्हें किताब में क्या अच्छा लगा या उन्हें क्या रोचक या मजेदार लगा। इससे उन्हें एक आनंददायक तरीके से पठन के बारे में बात करने का समय मिलेगा।

यदि आप हर सप्ताह विद्यार्थियों के एक समूह को ऊंची आवाज़ में पढ़ता हुआ सुनते हैं तो एक माह या छः सप्ताह की अवधि में आप अपनी कक्षा के हर विद्यार्थी को ऊंची आवाज़ में पढ़ता हुआ सुनने में सक्षम होंगे। एक चार्ट तैयार करें जिसमें यह दिखाया गया हो कि हर सप्ताह आपके साथ कौन-सा समूह पढ़ेगा। इसे आपके लिए और विद्यार्थियों के प्रत्येक समूह के लिए एक विशेष समय बनाएँ।

विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन करने और इसे दर्ज करने की विधियों के बारे में अधिक जानकारी के लिए संसाधन 1, 'मानीटरिग और फीडबैक देखें।

3 मौन रहकर पढ़ने के लिए संसाधन

विद्यार्थियों को कक्षा में मौन रहकर पढ़ने के अवसर दिए जाने चाहिए। इस बात की बहुत अधिक संभावना है कि वे वास्तविक जीवन में इसी तरह पढ़ेंगे। आपके विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए तैयार करने के लिए, आप 'रीडिंग कार्ड्स' का उपयोग कर सकते हैं: छोटी पुस्तिकाएं या कार्ड, जिन पर संक्षेप में कोई पाठ या कहानियाँ लिखी होती हैं और कठिनाई के अनुसार उनकी श्रेणियाँ बनाई जाती हैं। आप अलग अलग तरह की अंग्रेज़ी भाषा की पाठ्यपुस्तकों से सरल पाठ या कहानियों को कॉपी करके अपने खुद के ग्रेड कार्ड्स तैयार कर सकते हैं। आप पाठ्यपुस्तक में अभ्यास के भाग के रूप में दिए गए कुछ प्रश्न लिख सकते हैं या अपने खुद के प्रश्न बना सकते हैं।

गतिविधि 3: मौन रहकर पढ़ने के लिए रीडिंग कार्ड्स ढूँढना

चित्र 1 में शुरुआती पाठक के लिए एक वर्ड रीडिंग कार्ड का उदाहरण दिखाया गया है। प्रत्येक कार्ड में शब्दों के समूह के लिए चित्र हैं, जिनके अर्थ एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, और जिनमें एक समान निर्देश हैं। शुरू करते समय, आप अपने विद्यार्थियों को उनकी भाषा में निर्देश समझा सकते हैं।

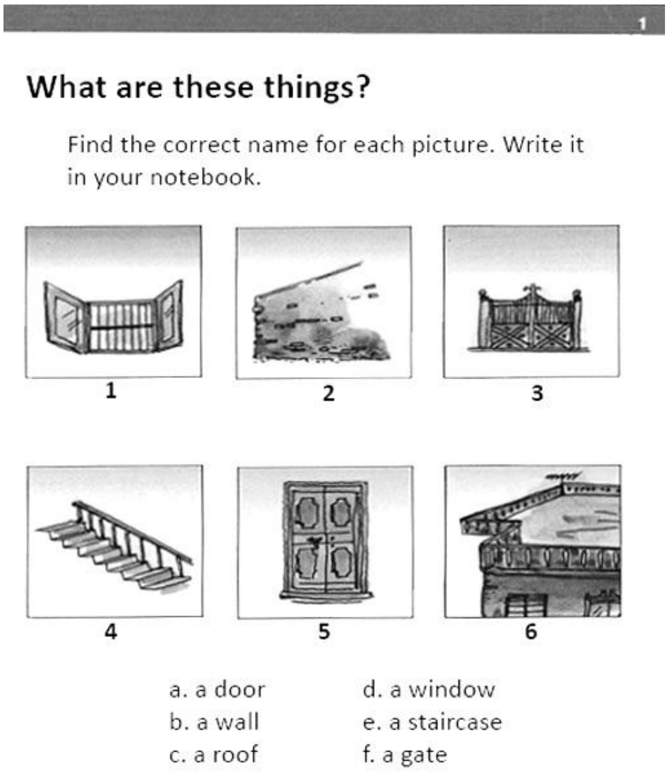

चित्र **1** एक रीडिंग कार्ड का उदाहरण।

चित्र 2 में और दो रीडिंग कार्ड दिखाए गए हैं, इस बार इनमें छोटी कहानियाँ हैं।

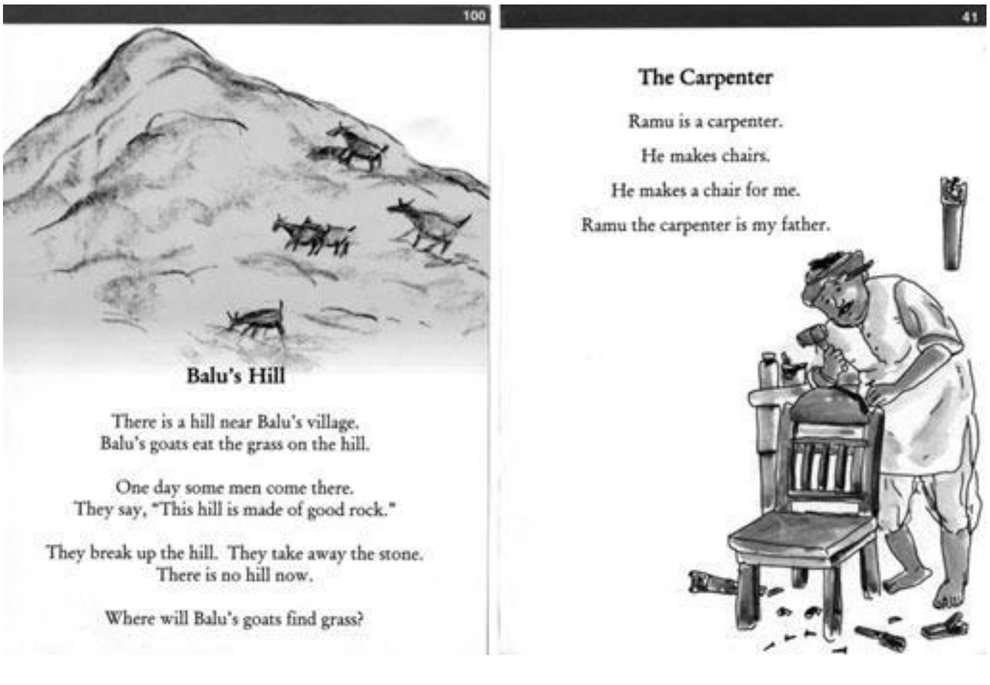

चित्र **2** दो कहानी के कार्ड।

हर कार्ड के पीछे कुछ प्रश्न हैं, जो नीचे दिए गए हैं। आपके अनुसार वे सरल हैं या कठिन हैं? किस कक्षा के विद्यार्थी इन कार्ड्स को पढ़ने और प्रश्नों के उत्तर खुद देने में सक्षम होंगे?

‘Balu’s Hill’

Choose the right words:

- Balu’s village is near a ______ (hill, river).
- Balu has some ______ (dogs, goats).
- The goats eat ______ (stone, grass).
- The hill is made of ______ (rock, grass).
- The men take away the ______ (grass, stone).

‘The Carpenter’

Choose the right words:

- Ramu is a ______ (farmer, carpenter).
- Ramu makes ______ (cars, chairs).
- Ramu makes a ______ (chair, table) for me.
- Ramu is my ______ (mother, father).

क्या आपको रीडिंग कार्ड्स का उपयोग करने का अनुभव है? यदि ऐसा है तो आपके अनुसार विद्यार्थियों के लिए इनके उपयोग के लाभ और समस्याएँ क्या हैं?

क्या आपके पास रीडिंग कार्ड्स उपलब्ध हैं लेकिन आपने कक्षा में कभी उनका उपयोग नहीं किया है? आप किस वजह से इनका उपयोग नहीं कर सके हैं?

क्या आपको लगता है कि आप अपने खुद के रीडिंग कार्ड्स बना सकते थे, शायद पाठ्यपुस्तक के किसी पाठ पर आधारित? जिन विद्यार्थियों को सुधारात्मक कार्य की आवश्यकता है उनके लिए आप इन्हें कैसे डिज़ाइन करेंगे?

रीडिंग कार्ड्स के द्वारा विद्यार्थी कम कठिन कार्ड्स से ज्यादा कठिन कार्ड्स की तरफ बढ़ते समय अपनी खुद की समझ की निगरानी या मूल्यांकन कर सकते हैं। विद्यार्थी खुद यह चुन सकते हैं कि उन्हें किस ‘स्तर’ का कार्ड पढ़ना है: यदि कोई कार्ड बहुत ही सरल है, तो वे अगले कार्ड पर जा सकते हैं; यदि कोई कार्ड बहुत ही कठिन है तो वे किसी सरल कार्ड पर वापस आ सकते हैं।

गतिविधि 4: रीडिंग कार्ड्स बनाना

रीडिंग कार्ड्स का एक बहुत ही सरल सेट बनाएँ। आप अंग्रेज़ी भाषा की शब्दावली, एक बहुत छोटी कविता या कहानी, अथवा किसी विषय के लिए तथ्यों का एक सेट चुन सकते हैं (उदाहरण के लिए जानवरों के नाम या शरीर के अंगों के नाम)।

1. कैंची, सख्त कार्ड और गोंद लें।
2. छः कार्ड काटें – इनका आकार पर्याप्त रूप से इतना बड़ा होना चाहिए कि विद्यार्थी इन्हें आसानी से पकड़ सकें और पढ़ सकें।
3. शब्दावली या कोई बहुत छोटा-सा पाठ चुनें।
4. कार्ड की एक तरफ वह पाठ लिखें।
5. यदि उचित हो तो चित्र बनाएँ या चिपकाएँ।
6. कार्ड की दूसरी तरफ उस पाठ के बारे में सरल प्रश्न लिखें।

30-मिनट के एक सत्र की योजना बनाएँ, जिसमें आप विद्यार्थियों के एक छोटे समूह (छः से ज्यादा नहीं) को ये कार्ड देंगे। उन्हें ये कार्ड् पढ़ने और प्रश्नों के उत्तर उनकी कॉपी में लिखने को कहें।

आप इस समूह को भी उसी समय और उसी तरीके से व्यवस्थित कर सकते हैं, जैसा आपने ऊंची आवाज़ में पढ़कर सुनाने वाले छोटे समूह (गतिविधि 2) को किया था। शेष कक्षा को कोई दूसरा काम दिया जाना चाहिए, जिसे वे अकेले चुपचाप कर सकें। कक्षा को बताएँ कि हर किसी को रीडिंग कार्ड के साथ समूह में काम करने का मौका मिलेगा। उन्हें यह समझाएँ कि पाठ छोटे हैं और

प्रश्न सरल हैं इसलिए विद्यार्थी खुद ही उन प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम होने चाहिए। यह विद्यार्थियों के लिए स्वतंत्र रूप से काम करने का कौशल विकसित करने का एक मौका है।

आप चुपचाप पढ़ने वाले अपने विद्यार्थियों की मानीटरिग और मूल्यांकन करने के लिए यह देख सकते हैं कि दिए गए समय में वे किस स्तर के कितने कार्ड पढ़ते हैं और क्या उनके उत्तर सही हैं या नहीं। आप विद्यार्थियों की समझ का आकलन करने के लिए अपनी ओर से प्रश्न भी पूछ सकते हैं।

अगले भाग में, क्षमता समूहों में निर्देशित पठन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। जब आप पढ़ते हैं, तो साथ ही इस बारे में सोचें कि निर्देशित पठन के लिए रीडिंग कार्ड्स का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

4 समूहों में पूरी कक्षा का निर्देशित पठन

निर्देशित पठन में आप पूरी कक्षा को पठन क्षमता के अनुसार समूहों में व्यवस्थित करते हैं। प्रत्येक समूह के पास अलग-अलग पुस्तकें या पठन कार्ड्स, अथवा उनके पठन स्तर के अनुरूप साझा पुस्तक होती है।

निर्देशित पठन।

आपको प्रत्येक समूह के साथ समय बिताना होता है और बारी-बारी से हर विद्यार्थी ऊंची आवाज़ में बोलकर पढ़ता है जिसे आपको सुनना होता है। जब आप एक समूह के साथ काम कर रहे हों तो अन्य समूहों को स्वतंत्र रूप से काम करना चाहिए।

- क्या आपने कभी ऐसा किया है, या ऐसा होते हुए देखा है?
- आपके अनुसार इस विधि के लाभ क्या हैं? आपके अनुसार इस विधि की हानियाँ क्या हैं?
- अपनी कक्षा को पठन के लिए समूह में रखने के लिए आपको क्या मालूम होना आवश्यक है?

विद्यार्थी अलग अलग गति से पढ़ेंगे और अलग अलग समय पर पूरा करेंगे। जब आप विद्यार्थियों को समूह में पढ़ने के लिए सेट करते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि पढ़ने का काम पूरा हो जाने के बाद करने के लिए उन्हें कोई अतिरिक्त काम दें जैसे कहानी के पात्रों के चित्र बनाना, वर्कशीट पूरी करना, कहानी का नया अंत लिखना या पुस्तक के लिए नया कवर डिज़ाइन करना। यह अतिरिक्त कार्य एक पुरस्कार के रूप में काम कर सकता है और इससे विद्यार्थियों को प्रेरणा मिल सकती है।

संसाधन 2, 'समूह में कार्य का उपयोग करना' देखें।

वीडियो: समूह में कार्य का उपयोग करना

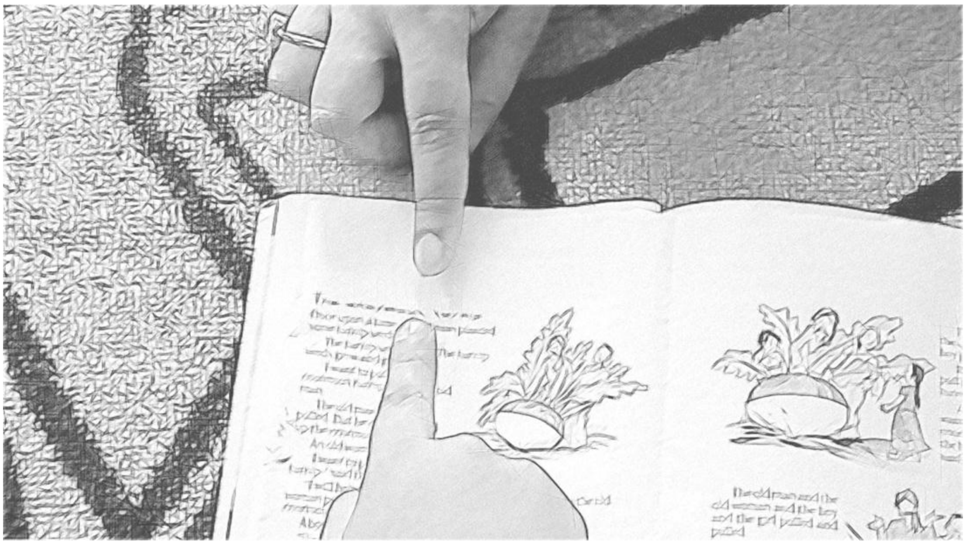

पठन में विद्यार्थियों की मदद करना।

अंतिम केस स्टडी में एक शिक्षिका एक चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में निर्देशित पठन आयोजित करती हैं।

केस-स्टडी 2: श्रीमती मारिया निर्देशित पठन समूहों का प्रबंधन करती हैं

श्रीमती मारिया कई ग्रेड वाली एक कक्षा को अंग्रेज़ी भाषा पढ़ाती हैं, जिसमें कक्षा चार से छः के 46 विद्यार्थी हैं, जिनके पठन स्तर अलग अलग हैं। उन्होंने कुल 80 मिनट की अवधि वाले दो पीरियडों के लिए एक निर्देशित पठन सत्र की योजना बनाई।

समूहीकरण और संसाधन

पहले मैंने विद्यार्थियों को छः समूहों में बिठाया: आठ-आठ विद्यार्थियों के पाँच समूह और छः विद्यार्थियों का एक समूह। मैंने चार विद्यार्थियों की मदद से बैठने की व्यवस्था बनाई और हर विद्यार्थी का नाम पुकारा एवं उसे एक समूह आवंटित किया। विद्यार्थियों को प्रत्येक समूह में आवंटित करते समय मैंने इस बात को सुनिश्चित करने पर ध्यान दिया कि एक समान पठन क्षमता वाले विद्यार्थी एक समूह में रखे जाएं।

एक समूह के विद्यार्थी अंग्रेज़ी *भाषा को* लगभग पढ़ ही नहीं पाते थे इसलिए मैंने इस समूह को कक्षा एक की कहानी की एक बड़ी पुस्तक दी। दो समूहों के विद्यार्थी काफी हद तक वाक्पटुता के साथ पढ़ सकते थे। इनमें से एक समूह को मैंने एक कहानी की किताब दी जो मैंने स्कूल की लाइब्रेरी से ली थी और दूसरे समूह को मैंने सरल कहानियों का एक संग्रह दिया, जिसका संकलन मैंने अख़बार में बच्चों के पन्ने से। अन्य दो समूहों के विद्यार्थी अंग्रेज़ी अक्षरों और ध्वनियों से परिचित थे और वे कई शब्दों को पहचान सकते थे, इसलिए मैंने उन्हें शब्दों और चित्रों व सरल प्रश्नों वाले रीडिंग कार्ड्स दिए। मैंने ये कार्ड पिछले साल बड़ी उम्र वाले विद्यार्थियों की मदद से बनाए थे।

आखिरी समूह के छः विद्यार्थियों को विशेष मदद की ज़रुरत थी। एक छात्रा नेत्रहीन थी, दूसरा विद्यार्थी डिस्लेक्सिया से ग्रस्त था और चार प्रवासी विद्यार्थी थे जिन्होंने दस दिन पहले ही स्कूल में प्रवेश लिया था। मैंने नेत्रहीन छात्रा को टेक्टाइल अक्षर दिए जो मैंने सैंडपेपर से काटे थे। इसकी सलाह मुझे गर्मियों में समावेशित शिक्षा के प्रशिक्षण के दौरान मिली थी। मैंने उसे इन अक्षरों को महसूस करके अनुमान लगाने को कहा कि ये कौन-कौन से अक्षर हैं और उसे बताया कि मैं थोड़ी देर बाद वापस आकर उसकी मदद करुँगी। शेष पाँच विद्यार्थियों को मैंने एक बड़ी चित्र-पुस्तिका दी, जिसे पहले मेरा बेटा पढ़ता था लेकिन अब वह उस लिहाज से बड़ा हो चुका है। मैंने इस समूह से कहा कि वे बारी-बारी से इस चित्र-पुस्तिका को देखें और धीमी-आवाज़ में इस बारे में बात करें कि उन्हें चित्रों में क्या दिखाई दिया। मैंने उन्हें यह भी बताया कि मैं वापस लौटकर उनकी मदद करुँगी।

मानीटरिग और आकलन

मैंने विद्यार्थियों के तीन समूहों का अवलोकन करने की योजना बनाई थी। दो समूह उन विद्यार्थियों के जिन्हें पढ़ने में कठिनाई हो रही थी और एक समूह वाक्पटु विद्यार्थियों का। दो पीरियडों की उस 80-मिनटों की अवधि में मैंने यह भी सुनिश्चित करना चाहती थी कि मैं विद्यार्थियों के सभी समूहों के साथ समय बिताऊं।

जब विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में सेट हो गए तो मैंने लगभग पाँच मिनट में सभी समूहों का निरीक्षण करके यह सुनिश्चित किया कि वे सभी पढ़ रहे थे और समझ गए थे कि उनसे क्या अपेक्षित है। एक बार इस बात की तसल्ली कर लेने के बाद मैंने प्रत्येक समूह के साथ 10-15 मिनट बिताए और प्रत्येक विद्यार्थी से कहानी का एक भाग सुना तथा ऐसा करते समय ज़रुरत के अनुसार उनकी मदद की और प्रश्न पूछकर अनुमान लगाया कि उन्होंने जो पढ़ा है उसमें से वे कितना समझ सके हैं। ऐसा करते समय, मैंने एक जाँच-सूची का उपयोग किया जो मैंने प्रत्येक विद्यार्थी के लिए पहले ही तैयार कर ली थी और ज़रुरत के अनुसार इसमें संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखीं।

कक्षा प्रबंधन

जब मैं तीसरे समूह तक पहुँची, एक अन्य समूह के दो विद्यार्थी शोरगुल करने लगे। पहले समूह के ज्यादातर विद्यार्थियों ने अपना पढ़ने का काम पूरा कर लिया था और वे मेरा ध्यान आकृष्ट करने के लिए शोर मचा रहे थे। एक पल के लिए मुझे बहुत घबराहट महसूस हुई। मैंने तीसरे समूह के साथ ज्यादा समय बिताने की योजना बनाई थी क्योंकि वे पढ़ने में कठिनाई महसूस कर रहे थे, हालांकि उन्होंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की थी। मेरे लिए तुरंत ही कुछ करना ज़रूरी था। मैं उन दो विद्यार्थियों को अलग किया जो शोर मचा रहे थे और उन्हें दो अलग अलग समूहों में भेजकर दूसरों की मदद की और उनसे कहा कि मैं यह देखूंगी कि वे ऐसा कर पाते हैं या नहीं। जिन विद्यार्थियों ने पढ़ने का काम पूरा कर लिया था मैंने उनसे कहा कि वे अपनी कॉपी में कहानी का वर्णन करने वाले चित्र बनाएँ। मैंने दो अन्य विद्यार्थियों से कहा कि वे अंतिम समूह को चित्र-पुस्तिका पढ़कर सुनाएँ। यह सब करने के बाद ही मैं तीसरे समूह के साथ अगले 20 मिनट बिताने में सक्षम हो सकी।

इतनी देर में कक्षा के शोर का स्तर लगातार बढ़ता जा रहा था क्योंकि विद्यार्थियों ने या तो पढ़ने का काम पूरा कर लिया था या वे अशांत हो गए थे। मैंने अपनी गिनने की रणनीति का प्रयास किया। मेरे विद्यार्थी जानते हैं कि जब मैं धीरे-धीरे पाँच तक गिनना शुरू करती हूँ तो उन्हें तुरंत अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाना चाहिए और शोर मचाना बंद कर देना चाहिए। भोजन की छुट्टी के लिए अब सिर्फ पाँच मिनट का समय बचा था। मैंने जल्दी से उन्हें होमवर्क असाइनमेंट दिया कि वे अपने घर के या पड़ोस वाली दुकान से किन्हीं तीन उत्पादों के लेबल पढ़ें और उनकी नकल करके लाएँ। मैंने अंतिम समूह के छः विद्यार्थियों को एक तरफ बुलाया और उनसे कहा कि गृह कार्य में वे किन्हीं तीन उत्पादों के चित्र बनाएँ और उनके पहले अक्षर लिखें। मैंने नेत्रहीन छात्रा से कहा कि वह अपनी माँ से तीन उत्पादों के नाम पूछे और अगली कक्षा में वे नाम दोहराए।

मैंने घंटी बजने के बाद तुरंत ही अपनी डायरी में दर्ज कर लिया कि जिस समूह को लाइब्रेरी की किताबें दी थीं उनके साथ अगली कक्षा में समय बिताना है और जिन विद्यार्थियों को मैं उस दिन पढ़ते हुए नहीं सुन सकी, उनके नाम भी मैंने दर्ज कर लिए।

विचार कीजिए

श्रीमती मारिया कक्षा की गतिविधियों का एक बहुत जटिल, बहु-स्तरीय सेट ज़्यादा विद्यार्थियों वाली एक कक्षा में किया। इसमें बहुत सारी गतिविधियाँ चल रही थीं। इस बारे में बताएँ कि आपकी कक्षा किस प्रकार श्रीमती मारिया की कक्षा जैसी या उससे अलग है। इस इकाई को ख़त्म करने के लिए श्रीमती मारिया की तकनीकों के बारे में निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

- श्रीमती मारिया द्वारा उपयोग की गई कुछ कक्षा प्रबंधन गतिविधियाँ क्या हैं?
- क्या आपने पठन और समूह कार्य गतिविधियों के लिए श्रीमती मारिया की रणनीतियों में से किसी का उपयोग किया है?
- यदि आप श्रीमती मारिया की जगह होते, तो आप क्या काम अलग ढंग से करते? क्यों?
- श्रीमती मारिया ने एक बड़ी पुस्तक, लाइब्रेरी की पुस्तकों, रीडिंग कार्ड्स, अखबारों से उन्होंने जो छोटी पुस्तकें बनाई थीं और उनके बेटे की चित्र-पुस्तिका का उपयोग किया। आपके पास ऐसे कौन-से संसाधन हैं, जिनसे आप कक्षा में अपने पठन समूहों को व्यवस्थित कर सकते हैं?
- श्रीमती मारिया ने बहुत बड़े विद्यार्थियों के लिए भी कक्षा एक की बड़ी पुस्तक का उपयोग किया। क्या आप कक्षा की किसी ऐसी किताब के बारे में सोच सकते हैं, जिसे आप ज्यादा वाक्पटु या कम वाक्पटु पाठकों को देने के लिए उपयोग कर सकें या अनुकूलित कर सकें?

यदि आपको नहीं लगता कि श्रीमती मारिया ने जो किया, वह सब-कुछ आप कर पाने में सक्षम हैं, तो हम आशा करते हैं कि इस इकाई से आपको अपनी कक्षा में अंग्रेज़ी पढ़ने के लिए नई दिनचर्या और संसाधनों को आज़माने के लिए कुछ विचार और प्रोत्साहन मिला होगा।

5 सारांश

इस इकाई में आपने अंग्रेज़ी *भाषा* में पठन को विकसित करने, इसकी निगरानी करने, और बोलकर पढ़ने से मौन रहकर पढ़ने की ओर जाने पर ध्यान केंद्रित किया। आपने संसाधनों के रूप में रीडिंग कार्ड्स देखें और आपने समूह कार्य में पढ़ने की प्रबंधन समस्याओं को देखा। आपने बोलकर पढ़ने और मौन रहकर पढ़ने के आकलन पर भी विचार किया।

कैसे पढ़ा जाए, यह जानने के सबसे बड़े लाभों में से एक यह है कि एक बार इस कौशल में महारत हासिल कर लेने पर, आपके विद्यार्थी वह सब-कुछ पढ़ सकते हैं, जो उन्हें रोचक लगे। वे अपनी गति आगे बढ़ते रह सकते हैं और क्या पढ़ा जाए यह जानने के लिए उन्हें शेष कक्षा की या शिक्षक की ज़रुरत नहीं होगी। हम आशा करते हैं कि इस इकाई की गतिविधियों और वृत्त अध्ययनों से आपको कक्षा में अंग्रेज़ी पढ़ने की अपनी दिनचर्या विकसित करने में मदद मिलेगी।

इस विषय पर अन्य आरंभिक अंग्रेजी अध्यापक विकास इकाइयाँ हैं:

- *अंग्रेज़ी भाषा वर्ण और ध्वनियाँ*
- *कहानी सुनाना*

- *साझा पठन*
- *पाठ की योजना तैयार करना पाठ सज्जा*
- *पढनें का माहौल कैसे बनाएँ*

संसाधन

संसाधन 1: मानीटरिग करना और फीडबैक देना

विद्यार्थियों का प्रदर्शन सुधारने के लिए सतत मानीटरिग करने और उन्हें उत्तर देने की ज़रुरत होती है, ताकि वे जान सकें कि उनसे क्या अपेक्षित है और काम पूरे करने के बाद उन्हें प्रतिक्रिया मिले। आपकी रचनात्मक प्रतिक्रिया से वे अपना प्रदर्शन सुधार सकते hSaA

मानीटरिग करना

प्रभावी शिक्षक अधिकांश समय अपने विद्यार्थियों की मानीटरिग करते हैं। आमतौर पर, ज्यादातर शिक्षक विद्यार्थियों की बातें सुनकर और कक्षा में वे क्या कर रहे हैं, इसका अवलोकन करके उनके कार्य की मानीटरिग करते हैं। विद्यार्थियों की प्रगति की मानीटरिग करना महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे उन्हें इन कामों में मदद मिलती है:

- ऊंचे ग्रेड हासिल करना
- अपने प्रदर्शन के बारे में अधिक सजग बनना और अपने सीखने के बारे में ज्यादा ज़िम्मेदार बनना
- अपने शिक्षण में सुधार करना
- प्रादेशिक और स्थानीयकृत परीक्षाओं में उपलब्धि का पूर्वानुमान लगाना।

एक शिक्षक के रूप में इससे आपको भी यह तय करने में मदद मिलेगी कि:

- कब एक प्रश्न पूछना है या एक संकेत देना है
- कब प्रशंसा करनी है
- कब चुनौती देनी है
- एक कार्य में विद्यार्थियों के अलग अलग समूहों को कैसे शामिल करना है
- गल्तियों के लिए क्या करना है।

जब विद्यार्थियों को उनकी प्रगति के बारे में एक स्पष्ट और त्वरित प्रतिक्रिया दी जाती है तब उनमें सबसे ज्यादा सुधार होता है। मानीटरिग का उपयोग करने से आप नियमित रूप से प्रतिक्रिया देने में सक्षम होंगे जिससे आपके विद्यार्थियों को यह पता चलेगा कि उनका प्रदर्शन कैसा है और अपने शिक्षण को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें और क्या करना होगा।

आपको जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, उनमें से एक यह है कि विद्यार्थियों की सहायता किस प्रकार की जाए, जिससे वे अपने स्वयं के सीखने के लक्ष्य निर्धारित कर सकें जिसे स्वतः-निरीक्षण भी कहा जाता है। विद्यार्थियों को खासतौर पर जिन्हें पढ़ने में कठिनाई हो रही है अपने सीखने का नियंत्रण अपने ही पास रखने की आदत नहीं होती है। लेकिन आप किसी भी विद्यार्थी की मदद कर सकते हैं, जिससे वे किसी परियोजना के लिए अपने लक्ष्य या ध्येय खुद तय कर सकें अपने कार्य की योजना बना सकें और अंतिम तिथियाँ निर्धारित कर सकें तथा अपनी प्रगति का निरीक्षण खुद कर सकें। इस प्रक्रिया का अभ्यास करने और स्वतः निरीक्षण के कौशल पर महारत हासिल करने से उन्हें स्कूल में और अपने पूरे जीवन में ही बहुत मदद मिलेगी।

विद्यार्थियों की बात सुनना और प्रेक्षण करना

अधिकांशतः शिक्षक स्वाभाविक रूप से विद्यार्थियों को सुनते और उनका अवलोकन करते हैं। यह निगरानी करने का एक सरल साधन है। उदाहरण के लिए आप

- अपने विद्यार्थियों को ऊँची आवाज में पढ़ते समय सुन सकते हैं
- जोड़ियों या समूहकार्य में चर्चाओं को सुन सकते हैं
- कक्षा में या बाहर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने में विद्यार्थियों का अवलोकन कर सकते हैं
- जब समूह कार्य कर रहे हों, तब उनकी हाव भाव की भाषा (body language) का अवलोकन कर सकते हैं।

सुनिश्चित करें कि आप जो अवलोकन एकत्रित करते हैं, वे विद्यार्थी के सीखने या प्रगति के वास्तविक प्रमाण हैं। केवल वही लिखें, जो आप देख सकते हैं, सुन सकते हैं, निर्धारित कर सकते हैं या गिन सकते हैं।

जब विद्यार्थी काम कर रहे हों तब अपनी कक्षा का चक्कर लगाकर अवलोकन की संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखें। आप एक कक्षा सूची का उपयोग करके यह दर्ज कर सकते हैं कि किन विद्यार्थियों को अधिक मदद की ज़रुरत है और यदि कोई गलतफहमी उभर रही है, तो उसे भी दर्ज कर सकते हैं। आप इन अवलोकनों और टिप्पणियों का उपयोग पूरी कक्षा को प्रतिक्रिया देने या समूहों या व्यक्तियों को आगे बढ़ाने और प्रोत्साहन देने के लिए कर सकते हैं।

प्रतिक्रिया देना

प्रतिक्रिया वह जानकारी होती है जो आप एक विद्यार्थी को इस बारे में देते हैं कि एक वर्णित लक्ष्य या अपेक्षित परिणाम के संबंध में उन्होंने कैसा प्रदर्शन किया है। प्रभावी ढंग से दी गई प्रतिक्रिया विद्यार्थियों को यह देती है:

- क्या हुआ है इसकी जानकारी
- कोई क्रिया या कार्य कितनी अच्छी तरह किया गया इसका मूल्यांकन
- इस बारे में मार्गदर्शन कि उनका प्रदर्शन किस प्रकार सुधारा जा सकता है।

जब आप प्रत्येक विद्यार्थी को प्रतिक्रिया देते हैं तो इससे उन्हें यह जानने में मदद मिलनी चाहिए कि:

- वे वास्तव में क्या कर सकते हैं
- वे अभी तक क्या नहीं कर सकते
- दूसरों की तुलना में उनका काम कैसा है
- वे इसमें सुधार कैसे कर सकते हैं।

यह याद रखना महत•वपूर्ण है कि प्रभावी ढंग से दी गई प्रतिक्रिया से विद्यार्थियों को मदद मिलती है। आप नहीं चाहेंगे कि आपकी प्रतिक्रिया अस्पष्ट या पक्षपाती हो, जिससे विद्यार्थी सीखना बंद कर दें। प्रभावी प्रतिक्रिया इस प्रकार की होती है:

- केंद्रित उन कामों पर जो किए जा रहे हैं और इस पर कि विद्यार्थी को क्या सीखना होगा
- स्पष्ट और ईमानदार, जो विद्यार्थियों को यह बताती है कि उनके सीखने के तरीके में क्या अच्छा है और किस्में सुधार ज़रूरी है
- कार्यवाही के योग्य, जो विद्यार्थियों से कुछ ऐसा करने को कहती है, जिसे वे कर पाने में सक्षम हैं
- इस तरह दी जाती है कि उसकी भाषा उपयुक्त हो, ताकि विद्यार्थी उसे समझ सकें
- इसे हमेशा सही समय पर दी जानी चाहिए – यदि यह बहुत जल्दी दी जाती है, तो विद्यार्थी को लगेगा कि 'मैं तो बस ये करने ही वाला था!'; अगर बहुत देर से दी जाती है, तो विद्यार्थी का ध्यान कहीं और चला जाएगा और वे वापस जाकर वह नहीं कर सकेंगे, जो करने को कहा गया है।

प्रतिक्रिया चाहे मौखिक हो, या विद्यार्थियों की वर्कबुक में लिखकर दी जाए, लेकिन यदि इसके लिए निम्नलिखित दिशार्निदेशों का पालन किया जाता है, तो यह अधिक प्रभावी बन जाती है।

प्रशंसा और सकारात्मक भाषा का उपयोग करना

जब हमारी प्रशंसा की जाती है और हमें प्रोत्साहित किया जाता है तो आमतौर पर हम उस समय के मुकाबले काफी अधिक बेहतर महसूस करते हैं, जबकि हमारी आलोचना की जाती है या हमारी गल्ति सुधारी जाती है। सुदृढ़ीकरण और सकारात्मक भाषा समूची कक्षा और सभी उम्र के व्यक्तियों के लिए प्रेरणादायक होती है। याद रखें कि प्रशंसा विशिष्ट और कार्य पर लक्षित होनी चाहिए, न कि स्वयं विद्यार्थी पर, अन्यथा इससे विद्यार्थी को प्रगति में मदद नहीं मिलेगी। 'बहुत बढ़िया' कहना विशिष्ट नहीं है, इसलिए निम्नलिखित में से कुछ कहना बेहतर होता है:

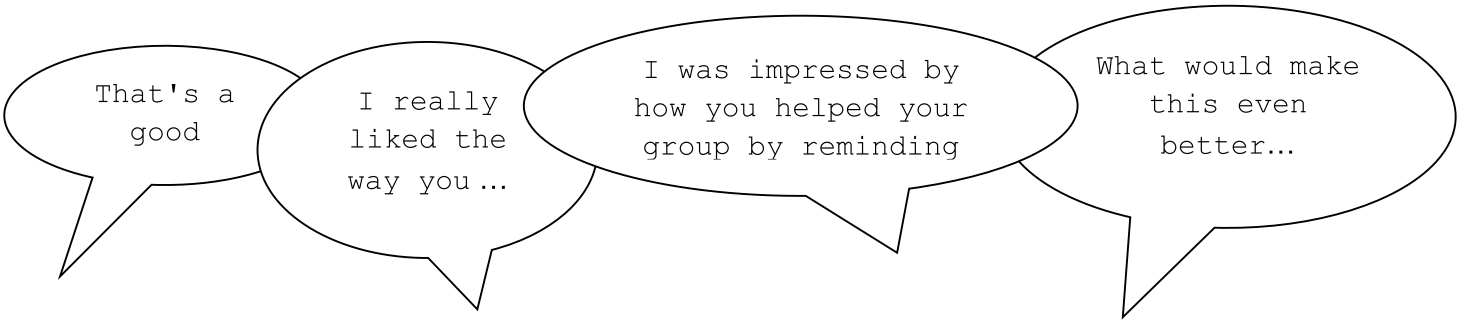

संकेत देने के साथ-साथ सुधार का उपयोग करना

आप अपने विद्यार्थियों के साथ जो बातचीत करते हैं, उससे उन्हें सीखने में मदद मिलती है। यदि आप उन्हें बताते हैं कि कोई उत्तर गलत है और आप बात वहीं ख़त्म कर देते हैं, तो आप सोचने और कोशिश करने में उनकी मदद करने का मौका गँवा देंगे। यदि आप विद्यार्थियों को कोई संकेत देते हैं और उनसे आगे एक प्रश्न पूछते हैं, तो इससे आप उन्हें ज्यादा गहराई में सोचने के लिए आगे बढ़ाते हैं उन्हें उत्तर ढूँढने तथा उनके खुद के सीखने के लिए ज़िम्मेदारी उठाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उदहारण के लिए, आप इस तरह की बातें बोलकर एक बेहतर उत्तर के लिए प्रोत्साहन दे सकते हैं या समस्या के किसी अलग पहलू की तरफ संकेत दे सकते हैं:

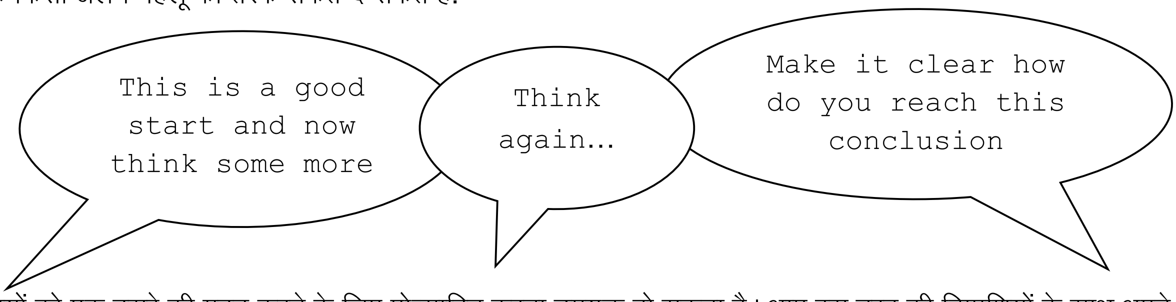

दूसरे विद्यार्थियों को एक दूसरे की मदद करने के लिए प्रोत्साहित करना उपयुक्त हो सकता है। आप इस तरह की टिप्पणियों के साथ अपने सवाल शेष कक्षा के साथ पूछकर यह काम कर सकते हैं:

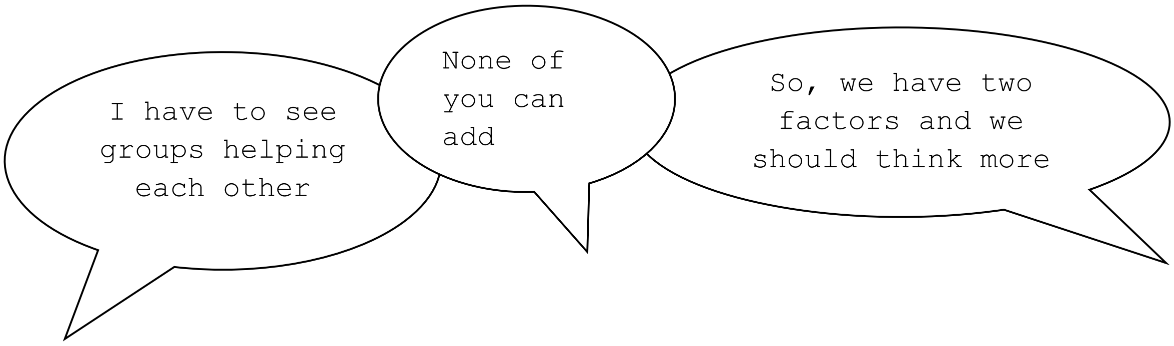

‘हाँ’ या ‘नहीं’ कहकर विद्यार्थियों के उत्तर सुधारना स्पेलिंग या संख्या अभ्यास जैसे कार्यों के लिए उपयुक्त हो सकता है, लेकिन इसके बावजूद भी यहाँ आप विद्यार्थियों को उनके उत्तरों में उभरने वाले पैटर्न देखने उसी तरह के उत्तरों के साथ संबंध जोड़ने या इस बारे में चर्चा करने के लिए आगे बढ़ा सकते हैं कि कोई विशिष्ट उत्तर क्यों गलत है।

स्वतः सुधार और साथी सुधार प्रभावी होते हैं और आप जोड़ियों में काम कर रहे विद्यार्थियों को उनका खुद का काम और दूसरों के काम जाँचने को कहकर उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। एक बार में एक पहलू को सुधारने पर ध्यान केंद्रित करना सबसे अच्छा होता है क्योंकि इसमें भ्रमित करने वाली बहुत ज्यादा जानकारी नहीं होती।

संसाधन 2: समूह में कार्य का उपयोग करना

समूहकार्य एक व्यवस्थित, सक्रिय, अध्यापन कार्यनीति है जो विद्यार्थियों के छोटे समूहों को एक आम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित करती है। ये छोटे समूह संरचित गतिविधियों के माध्यम से अधिक सक्रिय और अधिक प्रभावी शिक्षण को प्रोत्साहित करते हैं।

समूह में कार्य के लाभ

समूहकार्य विद्यार्थियों को सोचने संवाद कायम करने विचारों का आदान-प्रदान करने और निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करके सीखने हेतु उन्हें प्रेरित करने का बहुत ही प्रभावी तरीका हो सकता है। आपके विद्यार्थी दूसरों को सिखा सकते हैं और उनसे सीख भी सकते हैं: यह शिक्षण का शक्तिशाली और सक्रिय स्वरूप है।

समूहकार्य में विद्यार्थियों का समूहों में बैठना ही काफी नहीं होता हैं। इसमें स्पष्ट उद्देश्य के साथ सीखने के साझा कार्य पर काम करना और उसमें योगदान करना शामिल होता है। आपको इस बात को लेकर स्पष्ट होना होगा कि आप पढ़ाई के लिए सामूहिक कार्य का उपयोग क्यों कर रहे हैं और जानना होगा कि यह भाषण देने, जोड़े में कार्य या विद्यार्थियों के स्वयं से कार्य करने पर तरजीह देने योग्य क्यों है। इस तरह समूहकार्य को सुनियोजित और उद्देश्यपूर्ण होना आवश्यक है।

समूह में कार्य की योजना बनाना

आप समूह में कार्य का उपयोग कब और कैसे करेंगे यह इस बात पर निर्भर करेगा कि पाठ के अंत में आप कौन सा शिक्षण पूरा करना चाहते हैं। आप समूहकार्य को पाठ के आरंभ में, अंत में या बीच में शामिल कर सकते हैं, लेकिन आपको पर्याप्त समय का प्रावधान करना होगा। आपको उस कार्य के बारे में जो आप अपने विद्यार्थियों से पूरा करवाना चाहते हैं और समूहों को नियोजित करने के सर्वोत्तम ढंग के बारे में सोचना होगा।

एक अध्यापक के रूप में, आप समूहकार्य की सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं यदि आप निम्न की योजना अग्रिम रूप से बनाते हैं:

- सामूहिक गतिविधि के लक्ष्य और अपेक्षित परिणाम
- किसी भी फीडबैक या सारांश कार्य सहित, गतिविधि को आबंटित समय
- समूहों को कैसे विभाजित करना है (कितने समूह, प्रत्येक समूह में कितने छात्र, समूहों के लिए मापदंड)
- समूहों को कैसे नियोजित करना है (समूह के विभिन्न सदस्यों की भूमिका, आवश्यक समय, सामग्रियाँ, रिकार्ड बनाना और रिपोर्ट करना)
- कोई भी आकलन कैसे किया और रिकार्ड किया जाएगा (व्यक्तिगत आकलनों को सामूहिक आकलनों से अलग पहचानने का ध्यान रखें)
- समूहों की गतिविधियों पर आप कैसे मानीटरिंग रखेंगे।

समूहकार्य के नियतकार्य

वह कार्य जो आप अपने विद्यार्थियों को पूरा करने को कहते हैं वह इस पर निर्भर होता है कि आप उन्हें क्या सिखाना चाहते हैं। समूहकार्य में भाग लेकर, वे एक-दूसरे को सुनने, अपने विचारों को समझाने और आपसी सहयोग से काम करने जैसे कौशल सीखेंगे। तथापि, उनके लिए मुख्य लक्ष्य है जो विषय आप पढ़ा रहे हैं उसके बारे में कुछ सीखना। कार्यों के कुछ उदाहरणों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

- प्रस्तुतीकरण: विद्यार्थी समूहों में काम करके शेष कक्षा के लिए प्रस्तुतिकरण बनाते हैं। यह सबसे बढ़िया उपयोगी तब होता है जब प्रत्येक समूह के पास विषय का भिन्न पहलू होता है, जिससे वे एक ही विषय को कई बार सुनने की बजाय एक दूसरे को सुनने के लिए प्रेरित होते हैं। प्रत्येक समूह को प्रस्तुत करने के लिए दिए गए समय के विषय में काफी सख्ती बरतें और अच्छे प्रस्तुतिकरण के लिए मापदंडों का एक सेट निश्चित करें। इन्हें पाठ से पहले बोर्ड पर लिखें। विद्यार्थी मापदंडों का उपयोग अपने प्रस्तुतिकरण की योजना बनाने और एक दूसरे के काम का आकलन करने के लिए कर सकते हैं। इन मापदंडों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:
  - क्या प्रस्तुतिकरण स्पष्ट था?
  - क्या प्रस्तुतिकरण सुसंरचित था?
  - क्या मैंने प्रस्तुतिकरण से कुछ सीखा?
  - क्या प्रस्तुतिकरण ने मुझे सोचने पर मजबूर किया?
- समस्या को हल करना: विद्यार्थी किसी समस्या या समस्याओं की एक शृंखला को हल करने के लिए समूहों में कार्य करते हैं। इसमें शामिल हो सकता है, विज्ञान का कोई प्रयोग करना, गणित की समस्याएं हल करना, अंग्रेजी भाषा की कहानी या कविता का विश्लेषण करना, या इतिहास के सबूत का विश्लेषण करना।
- कोई कलाकृति या उत्पाद बनाना: विद्यार्थी समूहों में काम करके किसी कहानी, नाटक के भाग, संगीत के अंश, किसी अवधारणा को समझाने के लिए मॉडल, किसी मुद्दे पर समाचार रिपोर्ट या जानकारी को सारांशित करने या अवधारणा को समझाने के लिए पोस्टर का विकास कर सकते हैं। समूहों को किसी नए विषय के आरंभ में मंथन करने या मस्तिष्क में रूपरेखा बनाने के लिए पाँच मिनट देने से आपको इस बारे में बहुत कुछ जानकारी मिलेगी कि उन्हें क्या पहले से पता है, और आपको पाठ को उपयुक्त स्तर पर स्थापित करने में सहायता मिलेगी।
- विभेदित कार्य: समूहकार्य विभिन्न उम्रों या दक्षता स्तरों के विद्यार्थियों को किसी उपयुक्त काम पर मिलकर काम करने देने का अवसर है। अधिक दक्षता प्राप्त करने वाले काम को समझाने के अवसर से लाभ उठा सकते हैं, जबकि कम दक्षता प्राप्त करने वालों के लिए कक्षा की विभिन्न समूह में प्रश्न पूछना और उसका समाधान अपने सहपाठियों से ढूंढना ताकि वे इस तरह अपने सहपाठियों से सीख सकते हैं।
- चर्चा: विद्यार्थी किसी मुद्दे पर विचार करते हैं और एक निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। इसके लिए आपको अपनी ओर से काफी तैयारी करनी होगी ताकि सुनिश्चित हो सके कि विभिन्न विकल्पों पर विचार करने के लिए विद्यार्थियों के पास पर्याप्त ज्ञान है, लेकिन चर्चा या विवाद का आयोजन आप और उन के लिए बहुत उपयोगी हो सकता है।

समूहों को संगठित करना

चार से आठ के समूह आदर्श होते हैं किंतु यह आपकी कक्षा, भौतिक पर्यावरण और फर्नीचर, तथा आपकी कक्षा की दक्षता और उम्र के दायरे पर निर्भर करेगा। आदर्श रूप से समूह में हर एक के लिए एक दूसरे से मिलना, बिना चिल्लाए बात करना और समूह के परिणाम में योगदान करना आवश्यक होगा।

- तय करें कि आप विद्यार्थियों को समूहों में कैसे और क्यों विभाजित करेंगे; उदाहरण के लिए, आप समूहों को मित्रता, रुचि या समान अथवा मिश्रित दक्षता के अनुसार बाँट सकते हैं। भिन्न तरीकों से प्रयोग करें और समीक्षा करें कि प्रत्येक कक्षा के लिए क्या सर्वोत्तम है।
- योजना बनाएं कि आप समूह के सदस्यों को कौन सी भूमिकाएं देंगे (उदाहरण के लिए, नोट लेने वाला, प्रवक्ता, टाइम कीपर या उपकरणों का संग्रहकर्ता) और आप इसे कैसे स्पष्ट करेंगे।

समूहकार्य का प्रबंधन करना

आप अच्छे समूहकार्य के प्रबंधन के लिए दिनचर्याएं और नियम तय कर सकते हैं। जब आप नियमित रूप से समूहकार्य का उपयोग करते हैं, तो विद्यार्थियों को पता चल जाएगा कि आप क्या अपेक्षा करते हैं और वे इसे आनंददायक पाएंगे। टीमों और समूहों में काम करने के लाभों की पहचान करने के लिए आरंभ में कक्षा के साथ काम करना एक अच्छा विचार है। आपको चर्चा करनी चाहिए कि समूहकार्य में अच्छा व्यवहार क्या होता है और संभव हो तो 'नियमों' की एक सूची बनाएं जिसे प्रदर्शित किया जा सकता है; उदाहरण के लिए, 'एक दूसरे के लिए सम्मान', 'सुनना', 'एक दूसरे की सहायता करना', 'एक से अधिक विचार को आजमाना', आदि।

समूहकार्य के बारे में स्पष्ट मौखिक अनुदेश देना महत्वपूर्ण है जिसे ब्लैकबोर्ड पर संदर्भ के लिए लिखा भी जा सकता है। आपको:

- अपनी योजना के अनुसार अपने विद्यार्थियों को उन समूहों की ओर निर्देशित करना होगा जिनमें वे काम करेंगे। ऐसा आप शायद कक्षा में ऐसे स्थानों को निर्दिष्ट करके कर सकते हैं जहाँ वे काम करेंगे या किसी फर्नीचर या स्कूल के बैगों को हटाने के बारे में अनुदेश देकर कर सकते हैं।
- कार्य के बारे में बहुत स्पष्ट होना और उसे बोर्ड पर लघु अनुदेशों या चित्रों के रूप में लिखना चाहिए। अपने शुरू करने से पहले विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने की अनुमति प्रदान करें।

पाठ के दौरान, यह देखने और जाँच करने के लिए घूमें कि समूह किस तरह से काम कर रहे हैं। यदि वे कार्य से विचलित हो रहे हैं या अटक रहे हैं तो जहाँ जरूरत हो वहाँ सलाह प्रदान करें।

आप कार्य के दौरान समूहों को बदलना चाह सकते हैं। जब आप समूहकार्य के बारे में आत्मविश्वास महसूस करने लगें तब दो तकनीकें आजमाई जा सकती हैं – वे बड़ी कक्षा को प्रबंधित करते समय खास तौर पर उपयोगी होती हैं:

- **'विशेषज्ञ समूह':** प्रत्येक समूह को एक अलग कार्य दें, जैसे विद्युत उत्पन्न करने के एक तरीके पर शोध करना या किसी नाटक के लिए किरदार विकसित करना। एक उपयुक्त समय के बाद, समूहों को पुनर्गठित करें ताकि प्रत्येक नया समूह सभी मूल समूहों से एक 'विशेषज्ञ' से युक्त हो। फिर उन्हें एक कार्य दें जिसमें सभी विशेषज्ञों के ज्ञान को एकत्र करना होता है, जैसे निश्चय करना कि किस प्रकार का पॉवर स्टेशन बनाना या नाटक का अंश तैयार करना चाहिए।
- **'दूत':** यदि कार्य में कोई चीज बनाना या किसी समस्या को हल करना शामिल है, तो कुछ समय बाद, प्रत्येक समूह से किसी अन्य समूह में एक दूत भेजने को कहें। वे विचारों या समस्या के हलों की तुलना और फिर वापस अपने स्वयं के समूह को सूचित कर सकते हैं। इस प्रकार, समूह एक दूसरे से सीख सकते हैं।

कार्य के अंत में, जो कुछ सीखा गया है उसका सारांश बनाएं और आपको नज़र आई किसी भी गलतफहमी को सुधारें। आप चाहें तो प्रत्येक समूह का फीडबैक सुन सकते हैं, या केवल एक या दो समूहों से पूछ सकते हैं जिनके पास आपको लगता है कि कुछ अच्छे विचार हैं। विद्यार्थियों की रिपोर्ट करने की प्रक्रिया को संक्षिप्त रखें और उन्हें अन्य समूहों के काम पर फीडबैक देने को प्रोत्साहित करें जिसमें वे पहचान सकते हैं कि क्या अच्छा किया गया था, क्या बात दिलचस्प थी और किस बात को और विकसित किया जा सकता था।

यदि आप अपनी कक्षा में समूहकार्य को अपनाना चाहते हैं तो भी आपको कभी-कभी उसकी योजना बनाना कठिन लग सकता है क्योंकि कुछ विद्यार्थी:

- सक्रिय शिक्षण का प्रतिरोध करते हैं और उसमें शामिल नहीं होते
- हावी होने वाली प्रकृति के होते हैं
- पारस्परिक कौशलों की कमी या आत्मविश्वास के अभाव के कारण भाग नहीं लेते।

सीखने के परिणाम कहाँ तक प्राप्त हुए और आपके विद्यार्थियों ने कितनी अच्छी तरह से अनुक्रिया की (क्या वे सभी लाभान्वित हुए) इस पर विचार करने के अलावा, समूहकार्य के प्रबंधन में प्रभावी बनने के लिए उपरोक्त सभी बिंदुओं पर विचार करना महत्वपूर्ण होता है। सामूहिक कार्य, संसाधनों, समयों या समूहों की रचना में आप द्वारा किए जा सकने वाले समायोजनों पर सावधानी से विचार करें और उनकी योजना बनाएं।

शोध से पता चला है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पाने के लिए समूहों में सीखने का हर समय उपयोग करना आवश्यक नहीं है, इसलिए आपको हर पाठ में उसका उपयोग करने के लिए बाध्य महसूस नहीं करना चाहिए। आप चाहें तो समूहकार्य का उपयोग एक पूरक तकनीक के रूप में कर सकते हैं, उदाहरण के लिए विषय परिवर्तन के बीच अंतराल या कक्षा में चर्चा को अकस्मात शुरु करने के साधन के रूप में कर सकते हैं। इसका उपयोग विवाद को हल करने या कक्षा में अनुभवजन्य शिक्षण गतिविधियाँ और समस्या का हल करने के अभ्यास शुरू करने या विषयों की समीक्षा करने के लिए भी किया जा सकता है।

अतिरिक्त संसाधन

- Karadi Tales: http://www.karaditales.com/
- National Book Trust India: http://www.nbtindia.gov.in/
- NCERT textbooks: http://www.ncert.nic.in/NCERTS/textbook/textbook.htm
- Teachers of India classroom resources: http://www.teachersofindia.org/en

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Bromley, H. (2000) *Book-based Reading Games*. London: Centre for Literacy in Primary Education.

Bryant, P. and Nunes, T. (eds) (2004) *Handbook of Children's Literacy*. Dordrecht: Kluwer Academic Publishers.

Dombey, H. and Moustafa, M. (1998) *Whole to Part Phonics: How Children Learn to Read and Spell*. London: Centre for Literacy in Primary Education.

Goswami, U. (2010a) 'Phonology, reading and reading difficulties' in Hall, K., Goswami, U., Harrison, C., Ellis, S. and Soler, J. (eds) *Interdisciplinary Perspectives on Learning to Read*. London: Routledge.

Goswami, U. (2010b) 'A psycholinguistic grain size view of reading acquisition across languages' in Brunswick, N., McDougall, S. and Mornay-Davies, P. (eds) *The Role of Orthographies in Reading and Spelling*. Hove: Psychology Press.

Graham, J. and Kelly, A. (2012) *Reading under Control: Teaching Reading in the Primary School*, 3rd edn. London: Routledge.

Hall, K., Goswami, U., Harrison, C., Ellis, S. and Soler, J. (eds) (2010) *Interdisciplinary Perspectives on Learning to Read: Culture, Cognition and Pedagogy*. London: Routledge.

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा लाइसेंस के अंतर्गत ही इस प्रोजेक्ट में उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons Licence से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि यह सामग्री अपरिवर्तित रूप से केवल TESS-India प्रोजेक्ट में ही उपयोग की जा सकती है और यह किसी अनुवर्ती OER संस्करणों में उपयोग नहीं की जा सकती। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतारूपी आभार किया जाता है:

चित्र 1: रीडिंग कार्ड 1, अंग्रेज़ी 100, केन्द्रीय अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा संस्थान से रीडिंग कार्ड का उदाहरण: सीआईईएफएल हैदराबाद 2000। (Figure 1रू ष्xample of reading card from Reading Card 1, English 100, Central Institute of English and Foreign Languages: CIEFL Hyderabad, 2000.)

चित्र 2: रीडिंग कार्ड्स 100 और 41, अंग्रेज़ी 100, सीआईईएफएल से रीडिंग कार्ड के उदाहरण: सीआईईएफएल हैदराबाद 2000। (Figure 2: Example of reading card from Reading Cards 1000 and 41, English 100, CIEFL Hyderabad, 2000.)

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।